

इक्कीसवीं सदी: महापरिवर्तन और उज्ज्वल भविष्य

विज्ञान, अंतःप्रज्ञा और भविष्यवेत्ताओं के दृष्टिबोध का वैज्ञानिक विश्लेषण (अध्याय १६-२०)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

हजारों वर्ष

सभ्यताओं का विकास,
राजतंत्र का पतन।



सौ वर्ष

कुप्रथाओं (सती प्रथा,
छुआछूत) का अंत, साम्यवाद
और लोकतंत्र का उदय।



दशक

संचार, लेसर, और कंप्यूटर
क्रांति। ईसाइयत और साम्यवाद
का तीव्र वैश्विक विस्तार।



समय की गति तीव्र हो चुकी है। जो बदलाव
सहस्राब्दियों में होते थे, अब दशकों में हो
रहे हैं। ध्वंस व सृजन, सन्धि वेला की दो
अनिवार्य प्रक्रियाएँ साथ-साथ चल रही हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगान्त्रि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ चण्डिठ श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जैविक विज्ञान

मानव शरीर की कोशिकाएं हर १२ वर्ष में पूर्णतः बदल जाती हैं।



खगोल विज्ञान

सौरमंडल और राशियों का १२ खंडों में पूर्ण विभाजन और पंचांग चक्र।



इतिहास एवं अध्यात्म

प्रायश्चित, तपश्चर्या और पांडवों के वनवास की विशिष्ट १२ वर्षीय अवधि।



१२ वर्ष का सन्धिकाल
(1989-2000)

**नवयुग
का द्वार**

सूर्य

हर १२वें वर्ष सूर्य में भयंकर
विस्फोट (सौर कलंक)।

१९८९-९० में तीव्रतम
कलंक दर्ज

(संदर्भ: Washington Post /
Hindustan Times, Aug 1988)।

तीव्र विद्युत
चुम्बकीय
तूफान

पृथ्वी

मौसम असंतुलन,
नदियों-समुद्रों में उफान,
वृक्ष-वनस्पतियों की
आन्तरिक संरचना में
बदलाव।

सूक्ष्म
प्रभाव

मानव

जनसमुदाय की
मनःस्थिति में विक्षोभ,
आन्तरिक वैचारिक क्रांति,
और सामूहिक चेतना का
नव-निर्माण।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी कहियेग कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

(गायत्री परिवार के संस्थापक) (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भविष्य विज्ञान

अब यह एक पूर्णतः विज्ञान सम्मत विधा है।
(उदा: एल्विन टॉफ़लर की ‘Future Shock’,
फ़्रिट्जॉफ़ काप्रा की ‘The Turning Point’)
वर्तमान के अध्ययन द्वारा उज्ज्वल भविष्य की झाँकी।



अंतःप्रज्ञा से वैज्ञानिक चमत्कारों का जन्म

आइज़क न्यूटन

गिरता सेब → गुरुत्वाकर्षण
का अंतर्बोध।

बेंजामिन फ्रैंकलिन

तूफानी बिजली और चाबी
→ तड़ित चालक।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा मनसंवमी
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच
आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा आप सबसे कहियेगा –
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिमे क्रान्तिमी साहित्य के रूप
के रूप-वर्णन के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगान्धरि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जेम्स वॉट

उबलते पानी का ढक्कन →
भाप की शक्ति की स्फुरणा।

फ्रेडरिक कैकुले

स्वप्न में पूँछ काटता साँप
→ बेंजीन न्यूक्लियस।

सूक्ष्म से स्थूल की ओर: आविष्कार की प्रक्रिया

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तित्व के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

गहन चिंतन

स्नायु तन्तुओं के रहस्यों पर निरंतर शोध।

स्वप्नावस्था

अचेतन के गर्भ में समीकरणों का स्फुरण (ऑटो लोवी का स्वप्न)।

कागज पर अंकन

जाग्रत होते ही अंतर्बोध को चित्र/समीकरण में ढालना।

वैज्ञानिक क्रांति

‘एसिटाइल कोलीन’ जैसे रसायनों की खोज पूरी।

निष्कर्ष: हर महान कल्पना और आविष्कार दैवी चेतना का मानवी प्रज्ञा के माध्यम से प्रकटीकरण है।

मिस्र के पिरामिड

चीन की
विशाल दीवार

पनामा और
स्वेज नहर

हॉलैंड: समुद्र में डूबी
धरती पर खेती

महाकाल की युग प्रत्यावर्तन प्रेरणा

मानव पुरुषार्थ जब परब्रह्म की अचेतन प्रेरणा से जुड़ता है,
तो असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

इक्कीसवीं सदी का स्वरूप: नवयुग की अरुणोदय वेला

दिव्य दृष्टि
सम्पन्न
मनीषियों की
अंतःस्फुरणा

ज्योतिर्विज्ञान
और
फलित
ज्योतिष

धर्मग्रन्थों
में वर्णित
भविष्य
कथन

भविष्य
विज्ञानियों का
वैज्ञानिक
आकलन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नोस्ट्राडेमस की 'सेंचुरीज': अचूक भविष्यवाणियाँ

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

अतीत की सिद्ध भविष्यवाणियाँ

- ✓ नेपोलियन का उदय (फ्रांस)
- ✓ हिटलर (हिस्टलर) का तानाशाही युग
- ✓ जापान पर परमाणु बम का प्रहार

बुद्धिवाद की पराकाष्ठा,
प्रकृति का प्रकोप
और एण्टीक्राइस्ट
(चरम असुरता)
का अंत।

एज ऑफ टुथ का उदय।
तीन ओर सागर से घिरे,
पुरातन संस्कृति वाले देश
(भारतवर्ष) से एक
महाशक्ति का प्रादुर्भाव,
जो विश्व को शांति के मार्ग
पर ले जाएगा।

जीन डिकसन: इक्कीसवीं सदी का स्वरूप

1945-1963

(सत्य सिद्ध भविष्यवाणियां)

- रूजवेल्ट, स्टालिन और जॉन एफ. केनेडी की मृत्यु की अचूक पूर्व-घोषणा।

२०००

(वर्तमान संक्रमण)

- नीति और अनीति का भयंकर संघर्ष, परन्तु अंततः सत्प्रवृत्तियों की विजय।

इक्कीसवीं सदी

(2020 तक)

- नारी प्रधान नेतृत्व।
- भारत के आध्यात्मिक मूल्यों से समतावादी विश्व शासन।
- प्रदूषण समाप्ति, ऊर्जा के नए स्रोत और विचार-सम्प्रेषण का विकास।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भारतीय मनीषियों का स्पष्ट दृष्टिकोण

महर्षि अरविन्द



उच्छृंखलता के बाद 'सुपरचेतन सत्ता' का अवतरण।
'निष्कलंक प्रज्ञावतार' किसी व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रचण्ड 'विचारशक्ति' के रूप में होगा।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

स्वामी विवेकानन्द
(मद्रास, १८९७)



मन्दिर बनेंगे जनजागृति के केंद्र।
संस्कृत बनेगी विश्व भाषा।
नवयुवकों द्वारा 'आध्यात्मिक साम्यवाद' की स्थापना।

नवयुग की अरुणोदय वेला

श्रीमद्भागवत एवं रामायण

१२वें स्कंध में कलियुग की
समाप्ति के लक्षण।
सात्विकता की वृद्धि और
निष्कलंक सत्ता का
अवतरण।

बाइबिल (ओल्ड टेस्टामेंट)

‘सेवन टाइम्स’ भविष्यवाणी।
१९८०-२००० के बीच भारी
उथल-पुथल के बाद स्वर्णिम
युग की स्थापना।

इस्लाम (कुरआन / सैयद कुत्ब)

१४वीं सदी (हिजरी) में
कयामत के बाद पृथ्वी पर
दिव्य प्रकाश।
विज्ञान और धर्म का
अद्भुत समन्वय।
महामानवों का प्रादुर्भाव।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

१. तीव्र गति का
सन्धिकाल

२. सौर कलंक व
वैज्ञानिक शोध

३. दिव्य
अंतःस्फुरणा

४. अचूक
भविष्यवाणियां

युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि

पहुँचाधर्मी साँह्यने सच्च ॐ रूप में जन-जन तक
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ सं का प्रयास करें।”
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

उज्ज्वल भविष्य

विनाश नहीं, बल्कि ‘प्रज्ञा’ और ‘सत्प्रवृत्तियों’ का वैश्विक साम्राज्य।

हमारा दायित्व: विचारक्रान्ति के वाहक बनें

समय की पुकार पहचानें
(महाकाल की युग प्रत्यावर्तन
प्रक्रिया में सहयोगी बनें।)

अपने चिन्तन
और दिशा को बदलें
(निराशा त्यागें, आस्था
और पुरुषार्थ जगाएं।)

इस वैचारिक क्रांति
के माध्यम बनें

(साहित्य, वाणी और प्रामाणिक
जीवन से नवयुग का अलख जगाएं।)

ध्वंस और सृजन की इस
ऐतिहासिक वेला में
सृजन का हिस्सा बनें!

वसन्त पंचमी १९१० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)